

पद १३६

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

आज बड़ो ये कठिन भयो । नीर ढरकत नयन सिया रघुबीर
को ॥ध्रु॥ लगने बान जद पड़े लछमन । व्याकुल प्रान भयो धराधर
को ॥१॥ क्या कहूँ मैं भरत भैया को । कैसे मै जाऊँ अयोध्या
नगरको ॥२॥ जावेगे कहाँ कपि गिरिकंदर । जावे बिभीखन अब
कौन घरको ॥३॥ मानिक के प्रभु धनुख हात धरे । बताओ
निशाचर कहाँ किधर को ॥४॥